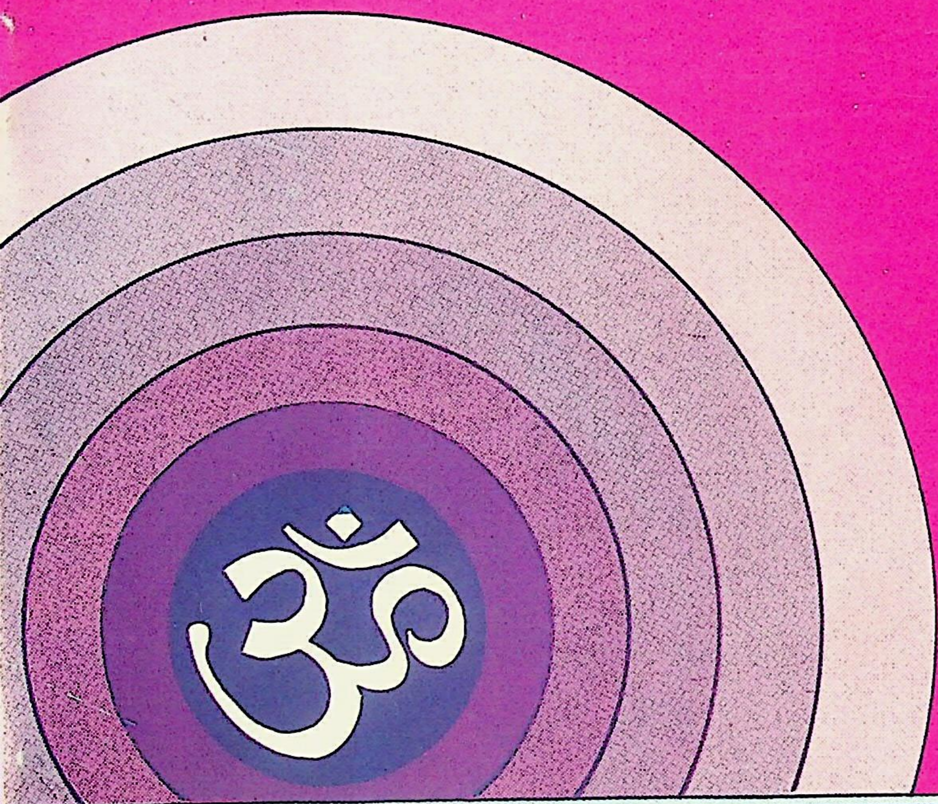
ब्रह्मज्ञानसागर



खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन,
बम्बई-४

श्रीब्रह्मज्ञानसागर

मुद्रक एवं प्रकाशकः

खेमराज श्रीकृष्णदास,

अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,

खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, मुंबई - ४०० ००४.

संस्करण - सन् २००१, सम्वत् २०५८

मूल्य : ६.०० रुपये मात्र ।

Published by M/s Khemraj Shrikrishnadass, 91/109, Khemraj Shrikrishnadass Marg,
7th, Khetwadi back Road Corner, Mumbai- 400 004.

Web Site : http://www.khemraj.com/
E-mail : khemraj@khemraj.com

Printed by Shri Sanjay Bajaj at 66,Hadapsar Industrial Estate, Pune - 411 013.



श्रीब्रह्मज्ञानसागरप्रारंभ १५

*

दोहा—जैसे है शुकदेवजी, जानत सब संसार ।
भगवत मत परगट कियो, जीव किये बहु पार ॥ १ ॥
तिन मोपै किरपा करी, दियो ज्ञान विज्ञान ।
सो शिख तुमसों कहत हौं, छूटै सब अज्ञान ॥ २ ॥
शिष्य सुनो अब कहत हौं, परम पुरातन ज्ञान ।
निगुरेको नहिं दीजिये, ताते तपकी हान ॥ ३ ॥

कुं—मोक्ष मुक्ति तुम चहत हो, तजो कामना काम ।
मनकी इच्छा मेटि करि, भजो निरंजन नाम ॥
भजो निरंजन नाम, तत्त्व देह अध्यास मिटावो ॥
पंचनके तजि स्वाद, आपमें आप समावो ॥
जब छूटै झूठी देह, जैसेके तैसे रहिया ॥
चरणदास यह मुक्ति, गुरूने हमसे कहिया ॥

दोहा—देह मरै तू है अमर, पार ब्रह्म है सोय ।
अज्ञानी भकटत फिरै, लखे सो ज्ञानी होय ॥ ४ ॥
देह नहीं तू ब्रह्म है, अविनाशी निरवान ।
नित न्यारो तू देहसों, देह कर्म सब जान ॥ ५ ॥
डोलन बोलन सो बनो, भक्षण करण अहार ।
दुख सुख मैथुन रोग सब, गरमी शीत निहार ॥ ६ ॥

जाति वरण कुल देहकी, सूरति मूरति नाम ।
उपजै विनशै देहसों, पांच तत्त्वको ग्राम ॥७॥

पंचतत्त्व १

दोहा--पावक पानी वायु है, धरती अरु अरु आकाश ।
पंचतत्त्वके कोटमें, आय किया तैं वास ॥ ८ ॥

तीन गुण २

दोहा-पांच पचीसौ देह सँग, गुण तीनों हैं साथ ।
घट उपाधिसों जानिये, करत रहै उत्पात ॥ ९ ॥

तमोगुण

दोहा-तामस अरु हिंसा करै, वचन चलन विपरीति ।
आलस अरु निन्दा करै, तामस गुणकी रीति ॥१०॥
दम्भ कपट छल छिद्र बहु, खोटे सब व्यवहार ।
झूठ वचन ऐंठो रहै, तामसके गुण धार ॥ ११ ॥

रजोगुण

दोहा-मान बडाई नाम ना, सिद्धि चहै भजि राम ।
भोजन नाना स्वादके, राजस गुणके काम ॥ १२ ॥
खेल तमासे राजसी, अरु सुगन्धकी वास ।
आपनको ऊंचो गनै, औरनकी करि हास ॥ १३ ॥

सत्त्वगुण

दोहा-दया क्षमा आधीनता, शीतल हिरदय धाम ।
सत्य वचन गुण सात्त्विकी, भजन धर्म निष्काम १४
दुखी न काहूको करै, दुख सुख निकट न जाय ।
समदृष्टी धीरज सदा, गुण सात्त्विकको पाय ॥१५॥

ग्रहण करनेयोग्य गुण ३

दोहा-राजससों तामस बढै, तामससों बुधि नाश ।
रजगुण तमगुण छाँडिकै, करो सतोगुण बास ॥१६॥

सतगुणमें मन थित करो, करि आतमसों नेह ।
आतम निर्गुण जानिये, गुण इन्द्री सँग देह ॥ १७ ॥
सात्त्विक राजस तामसी, त्रैगुणते संसार ।
तीन पांचको नाश है, माया ब्रह्म विचार ॥ १८ ॥
अहंतत्त्व ओंकार भो, जिनते तीनों देव ।
जिनके परे जु आतमा, अगम अगोचर भेव ॥१९॥
उपजै सो माया सभी, विनशि नेकमें जाय ।
छल माया सो कहत है, सुपना सकल विहाय॥२०॥
निराकार अद्वैत अचल, निरवासी तू जीव ।
निरालम्ब निर्वैर सो, अज अविनाशी सीव ॥२१॥

ज्ञान इंद्री ४

जिह्वा इंद्री नीरकी, नभकी इंद्री कान ।
नासा इंद्री धरणिकी, करि विचार पहिंचान ॥२२॥
त्वचासो इंद्री वायुकी, पावक इंद्री नैन ।
इनको साधै साधु जो, पद पावै सुख चैन ॥ २३ ॥

पृथ्वीकी प्रकृति ५

चाम हाड नाडी कहौं, रोम जान अरु मांस ।
यह पृथ्वी परकृति है, अन्त सबनको नास ॥ २४ ॥

पानीकी प्रकृति ६

रक्त बिन्दु कफ तीसरो, मेद मूत्रको जान ।
चरणदास प्रकृती इते, पानीसों पहिंचान ॥ २५ ॥

अग्निकी प्रकृति ७

निद्रा संगम आलकस, भूख प्यास जो होय ।
चरणदास पांचौ कही, अग्नि तत्त्व सो जोय ॥२६॥

वायुकी प्रकृति ८

बल करना अरु धावना, उठना अरु संकोच ।
देह बढै सो जानिये, वायु तत्त्व है शोश ॥ २७ ॥

आकाशकी प्रकृति ९

काम क्रोध मोह लोभ भय, तत्त्व अकाशको भाग ।
नभकी पांचौ जानिये, नित न्यारो तू जाग ॥२८॥

प्रकृतिविचार १०

रोम गगन नाडी पवन, मांस अग्निका अंश ।
त्वचा नीरसों जानिये, अस्थि महीको वंश ॥ २९ ॥
कफाकाश बिंदु वायुसों, रक्त अग्निसों बूझ ।
मूत्र नीर रणजीत भन, मेद पृथ्वीसों सूज ॥ ३० ॥
नीर व्योम सपरश पवन, आलस अग्नि पिछान ।
प्यास नीर रणजीत भन, भूख महीसों जान ॥३१॥
उठना तौ आकाशसों, बल करना है वायु ।
बढनि अग्नि धावन उदक, संकोचन महि आयु॥३२॥
लोभ जु नभका अंश है, काम वायुका भाग ।
क्रोध अग्नि जल मोह है, भय पृथ्वीका लाग॥३३॥

ब्रह्म ११

पांच पचासौ एकही, इनके सकल स्वभाव ।
निर्विकार तू ब्रह्म है, आप आपको पाव ॥ ३४ ॥
निराकार निर्लिप्त तू, देही जान अकार ।
आपन देही मान मत, यही ज्ञान ततसार ॥ ३५ ॥
शस्त्र छेदि तिहिं सकै नहिं, पावक सकै न जारि ।
मरै मिटैं सो तू नहीं, गुरुगम भेद निहारि ॥ ३६ ॥

जलै कटै काया यही, बनै मिटै फिरि होय ।
जीवअविनाशी नित्य है, जानै बिरला कोय ॥३७॥
जरा मरण धर्म देहको, भूख प्यास धर्म प्राण ।
सकल विकल मन जानिये, स्वाद सुइंद्री जान ॥३८॥
आँख नाक जिह्वा कहूं, त्वचा जान अरु कान ।
पाँचौ इंद्री ज्ञान हैं, जानै सन्त सुजान ॥ ३९ ॥
जो जो इनसों जानिये, निश्चय ना ठहराय ।
कहै सुनै चाखै लखै, सो सोई मिटि जाय ॥ ४० ॥
इंद्री जानि सकै नहीं, मन बुधि लहै न ताय ।
ज्ञान दृष्टि पहिचानिये, वासों वाको पाय ॥ ४१ ॥

कर्म इन्द्री

दोहा—गुदा लिंग मुख तीसरो, हाथ पाँव लखि लेह ।
पांचौ इन्द्री कर्म हैं, यह भी कहिये देह ॥ ४२ ॥
देह मिटत है सुपन ज्यों, जीव रहत है नित्त ।
देह कर्म विसराय करि, आतमसों कर हित्त ॥४३॥

साधन

दोहा—मनै जीतै इन्द्री गहै, चित्त स्थिर जब होय ।
आतमसों परचो रहै राखै सुरति समोय ॥ ४४ ॥

पृथ्वी

दोहा—पृथ्वी काल जे ठौर है, मुखै जानिये द्वार ।
पीरो रँग पहिचानिये, पीवन खान अहार ॥ ४५ ॥

जल

दोहा—जलको वासा भाल है, लिंग जानिये द्वार ।
मैथुन कर्म अहार है, रंग सफेद निहार ॥ ४६ ॥

अग्नि

दोहा-पित्तेमें पावक रहै, नैन जानिये द्वार ।
लाल रंग है अग्निको, मोह लोभ आहार ॥ ४७ ॥

पवन

दोहा-पवन नाभिमें रहत है, नासा जानि दुवार ।
हरो रंग है वायुको गंध सुगन्ध अहार ॥ ४८ ॥

आकाश

दोहा-आकाश शीशमें वास है, श्रवण दुवारे जान ।
शब्द कुशब्द अहार है, ताको श्याम पिछान ॥ ४९ ॥

तीन शरीर

दोहा-कारण सूक्षम लिंग है, अरु कहियत अस्थूल ।
शरीर तिनसों जानिये, मैं मेरी जड मूल ॥ ५० ॥

अवस्था चार

दोहा-जाग्रतका अस्थूल है, स्वप्ने लिंग शरीर ।
कारण जान सुषुप्ति है, तुरिया साक्षी वीर ॥ ५१ ॥
जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति औ, तुरी अवस्थ विचार ।
परा पश्यन्ती मध्यमा, वैखरि वाणी चार ॥ ५२ ॥

वाणी

दोहा-जाग्रत वासा नैनमें, स्वप्न कण्ठ अस्थान ।
जान सुषुप्ती हियेमें, नाभि तुरिय मन तान ॥५३॥
नाभि मध्य वाणी परा, हिये पसंती सुख्य ।
कंठ मध्यमा जानिये, कहूं वैखरी मुख्य ॥ ५४ ॥
चित बुधि मन हंकार जो, अन्तःकरण सुचार ।
ज्ञान अग्निसों जारिये, आतम तत्त्व विचार ॥५५॥

अन्तःकरण

दोहा–जलसों मन निश्चय कियो, भयो वायुसों चित्त ।
अहंकार भो अग्निसों, बुद्धि पृथ्वीसों मित्त ॥ ५६ ॥

पंच विषय

शब्द स्पर्श रु गंध है, अरु कहियत रसरूप ।
देह कर्म तनमात्रा तू, कहियत निहरूप ॥ ५७ ॥
शब्द गुण आकाशका, सपरश गुण है बाय ।
पृथ्वीका गुण गंध है, सो यह प्रगट दिखाय ॥५८॥
रूप अग्निका गुण कहूँ, रसगुण जलका जान ।
रणजीत बतावै खोलिकरि, ए शिष ले पहिंचान॥५९॥

इन्द्रियोंकी उत्पत्ति

दोहा–श्रवण मुख सु इन्द्री भई, तत्त्वाकाशसों दोय ।
त्वचा हाथइंद्री युगल, वायु तत्त्वसोंहोय ॥ ६० ॥
पावकसे इंद्री युगल, भये नैन अरु पाँव ।
जलसों जो इंद्री भई, लिंग रसना दो नाँव ॥ ६१ ॥
गुदा नासिका दो भई, पृथ्वीसों पहिंचान ।
चरणदास यह कहत हैं, एक कर्म इक ज्ञान ॥६२॥
राजससों इन्द्री भई, तामससों तत्व पांच ।
सात्विकसों चारों भये, चरणदास कहैं सांच ॥६३॥
तीनों गुणसे है परे, सो आतमको रूप ।
सो वह दृष्टि न आवई, अगम अगोचर रूप ॥६४॥

चौबीस तत्त्व

दोहा–दश इन्द्री तन पांच है, तन्मात्रा भी पांच ।
चारों अन्तःकरण हैं, ये चौबीसों बांच ॥ ६५ ॥

---

१ अन्तःकरण, मन बुद्धि, चित अहंकार ।

पन्द्रहको अस्थूल हैं, नौको लिंग शरीर ।
कारण झीनी वासना, तुरिया निर्मल धीर ॥ ६६ ॥
जाग्रतमें चौबीस हैं, स्वप्नेमें नौ जान ।
सुषुप्तिमें सब लीन ह्वै, ये अँग जडके मान ॥ ६७ ॥
तुरिया इकरस आतमा, निर्मल अचल अनाद ।
घटै बढै उपजे नहीं, तहाँ न वाद विवाद ॥ ६८ ॥
घटै बढै उपजे मिटै, जडको यही स्वभाव ।
सो सब कौतुक कर रही, नाना किये उपाव ॥६९ ॥
चेतन ज्योंकी त्यों सदा, सदा अकर्त्ता जोय ।
सब कर्मनसों रहित है, आतम ऐसो होय ॥ ७० ॥
काहूते उपजो नहीं, वाते भयो न कोय ।
वह न मरै मारै नहीं, राम कहावै सोय ॥ ७१ ॥
योग युगत करि खोजिले, सुरति निरति करि चीन ।
दश प्रकार अनहद बजै, होय जहां लवलीन ॥ ७२॥

दश वायु

दोहा–तीन बंध नौ नाटिका, दश बाईको जान ।
प्राणापान समान है और, और कहत उदान॥७३॥
व्यान वायु अरु किरकिरा, कूरम बाई जीत ।
नाग धनंजय देवदत, दश बाई रणजीत ॥ ७४ ॥

नाडी तीन

दोहा–नवो द्वारको बंधकरि उत्तम नाडी तीन ।
इडा पिंगला सुषुमना, केलि करै परवीन ॥ ७५ ॥

प्राणायाम

दोहा–करतै प्राणायामके, पावै आतम बेख ।
अनहद ध्वनिके बीचमें, देखै शब्द अलेख ॥७६॥

पूरक करि कुंभक करै, रेचक पवन उतार ।
ऐसे प्राणायाम करि, सूक्षम करै अहार ॥ ७७ ॥
धरती बन्ध लगाय करि, दशों वायुको रोक ।
मस्तक प्राण चढायकै, करैं अमरपुर भोग ॥ ७८ ॥
पांचौ मुद्रा साधिकै, पावै घटको भेद ।
नाडी शक्ति चढाइये, षट चक्करको छेद ॥ ७९ ॥
नासा ध्यान दृष्टि भृकुटीमें, सुरति श्वासके माहिं ।
आतम देखो जात है, यामें संशय नाहिं ॥ ८० ॥
योग युक्ति कै कीजिये, कै आतमको ध्यान ।
आपा आप विचारिये, परम तत्त्वको ज्ञान ॥ ८१ ॥

वर्णविचार

दोहा–शूद्र रु वैश्य शरीर है, ब्राह्मण औ रजपूत ।
बूढा बाला तू नहीं, चरणदास अवधूत ॥ ८२ ॥

आत्मज्ञान

दोहा–काया माया जानिये, जीव ब्रह्म है मित्त ।
काया छुटि सूरति मिटै, तू परमातम नित्त ॥८३॥
पाप पुण्य आशा तजौ, तजौ मान अरु थाप ।
काया मोह विकार तजि, जपै सुअजपा जाप ॥८४॥
आप भुलानो आपमें, बँधो आपही आप ।
जाको ढूंढत फिरतहो, सो तू आपहि आप ॥ ८५ ॥
इच्छा दुई बिसारिकै, क्यों न होय निरवास ।
तू तौ जीवन्मुक्त है, तजौ मुक्तिकी आस ॥८६॥
आपा खोजै आप लखि, आप अपनको देख ।
चरणदास नहिं तू ब्रह्म है, तूही पुरुष अलेख ॥८७॥

जैसे कछुवा सिमिटिकै, आपहिं माहिं समाय ।
तैसे ज्ञानी श्वासमें, रहै सुरति लवलाय ॥ ८८ ॥

सब घट रमो सो राम है, आदि पुरुष निर्गम्य ।
लख चौरासी योनिमें, एक समानो सम्य ॥ ८९ ॥

दृष्टि मुष्टि आवै नहीं, रूप न देखो जाय ।
बिन सूरति बिन नामको, घट घट रह्यो समाय॥९०॥

छप्पय-इच्छा हुई कर दूर आप तू ब्रह्म ह्वै जावै ।
और सो द्वितीया कौन तासुकी शीश नवावै ॥
माला तिलक बनाय पूर्व अरु पश्चिम दौरा ।
नाभि कमल कस्तूरि हिरण जंगल भो बौरा ॥
चरणदास लखि दृष्टि भरि एक शब्द भरपूर हैं ।
निरखि परखि ले निकट ही कहन सुननको दूर हैं ।
झूठीसी यह दृष्टि जगत सब झूठो दरशै ।
मूरख जानै सत्य तासुसों फिरि फिरि परशै ॥
चंद सूर थिर नहीं नहीं थिर पौन न पानी ।
त्रैदेवा थिर नहीं नहीं नहीं थिर माया रानी ॥
नव नाथ चौरासी सिद्ध जो चरणदास थिर ना रहै ।
ब्रह्म सत्य सर्वज्ञ है आतम विचार क्यों ना गहै ॥

दोहा-जो मुखसेती बोलिये, अरु सुनियत है कान ।
जो आँखिनसों देखिये, सबही माया जान ॥९१॥
एकै सब तन रमि रह्यो, चेतन जडके माहिं ।
माया दर्शत है सभी, ब्रह्म लखत है नाहिं ॥९२॥
जैसे तिलमें तेल है, फूल मध्य ज्यों वास ।
दूध मध्य ज्यों घीव है, लकडी मध्य हुतास ।

थावर जंगम चर अचर, सबमें एकै होय ।
ज्यों मनिकोंमें डोरि है, बाहर नाहीं कोय ॥ ९४ ॥
एक डोरि मनिका गुहे, अवरण वरण निहारि ।
आतम तौ निररूप है, नित्य अनित्य विचारि॥९५॥
माया यही स्वभाव है, उदय होय छिपि जाय ।
चंचल चपल सुहावनी, ओला ज्यों गलि जाय॥९६॥
परमातम तौ नित्य है, ताको आदि न अंत ।
सदा अचल चंचल नहीं , सब गुण रहत अनन्त॥९७॥
सत चेतन आनन्द है, आदि अन्त मधि हीन ।
आदि अन्त आकार को, सो तू झूठो चीन ॥९८॥
सूरति नाम अकार है, ज्यों भूतनको नाच ।
मृग तृष्णाको नीर है, निकट गये नहिं सांच ॥९९॥
चितवत सांचीसी लगै, खोज किये मिटि जाय ।
दीखै है पर है नहीं, कौतुकसों दरशाय ॥ १०० ॥

शिष्य वचन

ब्रह्म बिना खाली नहीं, धरबेको इक पाँव ।
मायाको कहँ ठौर है, सद्गुरु मोहिं बताव ॥१०१॥
निर्विकार तौ ब्रह्म है अद्वै अचल अपार ।
आइ माया कहांते, सद्गुरु कहौ विचार ॥ १०२ ॥

गुरुवचन

आप ब्रह्म माया भयो, ज्यों जल पाला होय ।
पाला गलि पानी भयो, ऐसे नाहीं दोय ॥ १०३ ॥
झूठी माया सो कहैं, ज्ञानी पंडित लोय ।
भर्म भूल सांची लगै, समझै सांच न होय ॥१०४॥

सोनेको गहनो गढै, कहन सुननको दोय ।
गहनो ना सोनो सबै, नेक जुदो नहिं होय ॥१०५॥
झूठ सांच दोनों वहै, झूठ मिटै इक सांच ।
नाम मिटै सूरत मिटे, भूषणको लग आंच ॥१०६॥
जाको माया कहत हैं, सो तू नेक निकास ।
जैसे हींग कपूरकी, नेक जुदी करवास ॥ १०७ ॥
जल समान तो ब्रह्म है, माया लहर समान ।
लहर सबै वह नीर है, लहर कहै अज्ञान ॥ १०८॥
खेल खिलौना खाँडके, कीजे लाख पचास ।
सकल खिलौना खाँड है, ऐसे गहु विश्वास॥१०९॥
दास खिलौना खाँडके, भाजन राखे खाँड ।
विन विनशेभी खाँड है, विनशि जाय तौ खाँड॥११०॥
माटीके भांडे भवै, सूरति अरु बहु नाम ।
विगसि फूटि माटी भई, बासन कहु केहि ठाम॥१११॥
ऐसेही माया नहीं, समझि देखु मन माहिं ।
जो दीखै सो ब्रह्म है, रेचक माया नाहिं ॥ ११२ ॥
इच्छा मेटै दुइ तजै, एकै मन विश्राम ।
ब्रह्मज्ञान विज्ञान है, समझ परमपद धाम ॥ ११३॥

सवैया

श्वास उसाँस चलै जब आवहि, है जु अखण्ड टरै नहिं टारो
भीतर बाहर है भरिपूर सो, ढूंढौ कहां नहिं नाहिं न न्यारो॥
दास कहै गुरुभेद दियो भ्रम, दूरि भयो जु हुतो अति भारो॥
दृष्टि अदृष्टि जु रामको देखत, राम भये पुनि देखन हारो॥

भगवद्ध्यान

दोहा—आप आपमें आप है, खेलौ बहु विस्तार ।
द्वितिया तो कछु है नहीं, एकहि एक निहार॥११४॥

कहिं नारायण नाभि है, कहीं ब्रह्म कहिं वेद ।
कहिं शंकर गिरजा कहीं, कहीं अभेदहिं भेद ॥११५॥
कहिं ऋषि मुनि कहिं देवता, कहीं सिद्ध कहिं नाथ ।
आपनको आपै खडो, कहूं न नावै माथ ॥ ११६ ॥
कहिं आसन कहिं तप करै, कहीं ज्ञान कहिं योग ।
कहीं दुखी कहिं सुख भयो, कहीं रोग कहिं भोग ११७
कहिं नारी कहिं नर भयो, कहिं बालक कहिं बाल ।
कहिं मँगता दाता कहीं, कहीं सुखी कंगाल ॥११८॥
कहीं वृक्ष कहिं फल भयो, कहीं फूल कहिं बीज ।
कहीं मूल शाखा भयो, कहिं माली कहिं सींच॥११९॥
कहिं मालिनि कहिं मालती, कहिं फुलवा कहिं नार ।
कहीं महल खिडकी भयो, दीपक कहिं उजियार१२०
कहीं बाग क्यारी भयो, कहीं भँवर गुंजार ।
कहीं घटा कहिं बिज्जुली, दादुर मोर बहार ॥१२१॥
कहिं पर्वत जंगल भयो, कहिं वारिद कहिं वारि ।
कहिं वडवानल अग्नि है, धारो तेज अपार ॥१२२॥
मानसरोवर भयो कहिं, मोती कहीं मराल ।
कहिं सरिता धीवर कहीं, कहीं मीन कहिं जाल १२३
कहीं कथा श्रोता कहीं, कहीं कीरतन रूप ।
कहीं त्याग वैराग लै, कीन्हों संत स्वरूप ॥ १२४ ॥
कहिं पृथ्वी कहिं वृक्ष हो, कहिं गोपी कहिं ग्वाल ।
कहीं प्रेमके रूप है, कहिं प्रेमी कहिं ख्याल ॥१२५॥
कहिं कालिंदी निकट हो, कहिं वृन्दावन धाम ।
कहिं कुंजै अति सोहनी, कहीं युगल लयो नाम१२६

कहिं सुगन्ध शीतलपवन, कहिं बंशीबट ठाँव ।
कहीं चरणही दास है, बार बार बलि जाँव ॥१२७॥
कहीं कन्हैया ह्वै खडो, एक पाँव अँग मोर ।
कहिं मुरली अधरन धरी, बाजत है घनघोर ॥१२८॥
कहीं मुकुट कुण्डल भयो, अलकैं कहीं कपोल ।
कहिं ललचौं हैं नैन हैं, नासा मुकुट सडोल ॥१२९॥
कहीं धुकधुकी कंठ है, कहिं मोतियनकी माल ।
कहिं बाजू नवरत्नके, नटवर मदन गोपाल ॥१३०॥
कहीं कडा कहिं कर भयो, कहिं पहुँची जहँगीर ।
रतन चौक गूंठी भयो, लागी संग जँजीर ॥१३१॥
कहीं बादलो जर्द है, नीमो ह्वै गयो अंग ।
कहिं बद्धी गल जिद है, कहीं साँवरो रंग ॥१३२॥
कहिं पैंजनि कहिं पग भयो, कहीं चरणको दास ।
कहीं आपही नख भयो, शशिसमान परकास ।१३३
आप आपमें आप है, आप आपनमें आप ।
आप अपनमें जपत है, आप आपनो जाप ॥१३४॥
अविनाशी नाश नहीं, नाशै न कबहूं होय ।
तत्त्व स्वरूपी एक है, कभी होय नहिं दोय ॥१३५॥
आप ब्रह्ममूरति भयो, ज्यों बुदगल जलमाहिं ।
सूरति विनशै नाम सँग, जल विनशत है नाहिं१३६॥
बुदगल देखो जल सबै, बुदगल कहूं न होय ।
कहबेको दूजो कहो, जल बुदगल नहिं दोय ॥१३७॥
भयो नेकम बुलबुलो, नाच कूद मिटि जाय ।
निराकार रहिजायगो, मूरति ना ठहराय ॥१३८॥
निराकार आकार धर, खेलौ कै इकबार ।
स्वप्नो है ह्वै मिटि गयो, रहो सारको सार ॥१३९॥

आप आपमें खेल मचायो । ज्यों पानी बुदगल ह्वै आयो ॥
ऐसे ब्रह्म धरी है काया । आपहि पुरुष आपहि माया ॥
आप नारायण लक्ष्मी भई । नाभि कमल अरु आपहि दई ॥
आपहि धरती आपहि पानी । आपहि रुद्र चतुर विज्ञानी ॥
ह्वै नारायण विष्णु कहायो । शेषनाग ह्वै शेषनाग पठायो ॥
तेतिस कोटि देवता भयो । ऋषिमुनि कोटि अठासी छयो ॥
चारों युग आपहि भयो लोका । पापपुण्य आपहि भयो शोका ॥
आपहि फूल शूल अरु वारी । आपहि पुरुष आपही नारी ॥

दोहा-जल थल पावक राम है, राम रमो सब माहिं ।
हरि सबमें सब राममें, और दूसरो नाहिं ॥ १४० ॥

दश अवतार आप धरि आयो । सेवक साहब आप कहायो ॥
आपहि गिरिवर आपहि तरुवर । आपहि हंस आपही सरवर ॥
आपहि चारि वर्ण षट दर्शन । पूजे आप आपही पर्शन ॥
आपहि ध्यानी आपहि प्रेमी । आपहि योग भोग अरु नेमी ॥
चरणदास शुकदेव बतायो । अपनो भेद आपही गायो ॥
तारा मण्डल आप अकाशा । आपहि चन्द सूर परकाशा ॥
जैसे जल तरंग ह्वै आई । उलटि फेरि जलमाहिं समाई ॥
आप आपमें स्वप्न उठायो । आपहि स्वप्न आप ह्वै आयो ॥
ना कछु गयो नहीं कछु आयो । अपनो भेद आप ही पायो ॥
ना कछु मिलै कटै नहिं छीजै । ना कछु उठै चलै नहिं भीजै ॥
स्वप्नो मिटि भया एकाकारा । ज्ञानी अबही ल्योह निहारा ॥
नहीं सूक्ष्म अस्थूल न भारी । रूप रंग नहि है परकारी ॥
वार पार कछु दीखत नाहीं । कबसों है अरु कबसों नाहीं ॥
कहा कहौं कछु कहन न आवै । गूँगो स्वप्नो कहा बतावै ॥

वारापार पार नहिं पायो। ढूँढत ढूँढत आप भुलायो ॥
कहत कहत मैं गयो हिराई। अब मोपै कछु कह्यो न जाई॥
दोहा-हद कहूं तौ है नहीं बेहद कहौं तौ नाहिं।
हद बेहद दोनों नहीं, चरणदास भी नाहिं ॥१४१॥
जग स्वप्नो सो ह्वै गयो, गयो पेखनो गाँव।
जब जागो तब मिटि गयो, चरणदास नहिं नाँव।१४२॥
छप्पय-तब न चन्द नहिं सूर नहीं नभमें तारागण।
नहिं धरती नहिं शेष नहीं अगती पारायण ॥
तब न रूप नहिं नाम नहीं त्रैगुण त्रैदेवा।
तब न ब्रह्म नहिं जीव नहीं साहब नहिं सेवा ॥
रणजीत मीत नहिं वैर तब निर्गुण सर्गुण ना हुता॥
तब न वेद वाणी नहीं नहिं ज्ञानी नहिं पंडिता ॥
जो श्रवणनसों सुनै और मुख सेती बागै।
जो कछु देख नैन और सोवै अरु जागै ॥
औ आवै दुर्गन्ध गन्ध नासाके माहीं।
यह सब झूठो जान कछू ठहरत है नाहीं ॥
अरु चरणदास उपजै नशै विनशै नहिं संसार कहुँ।
ब्रह्म सत्य सर्वज्ञ है सु झूटो दरशै स्वप्न यहुँ ॥
दोहा--ब्रह्म विना खाली नहीं, सरसों सम कहुँ ठौर।
स्वप्नोसो जग देखिये, स्वप्न भयो मन मोर ॥१४३॥
शुद्ध ब्रह्म है रैनि सम, जगत दिवाली दीव।
ज्यों तरंग जलमें उठै, ब्रह्मबीच ये जीव ॥ १४४ ॥
वार न जाको पाइये, पार परे नहिं चीन।
ऐसे सिन्धु अथाहमें, जगत जानिये मीन ॥ १४५ ॥

ब्रह्मबीच ये जीव सब, फिरत रहत आधीन ।
जैसे सागर सिन्धुमें, नानारूपी मीन ॥ १४६ ॥
जैसे लहरि समुद्रकी, उठत रहत तेहि माहिं ।
विन इच्छा बिन भावना, ह्वै ह्वै मिटि मिटि जाहिं।१४७।
औंडो सीव गँभीर हैं, विन इच्छा विन दोय ।
निजस्वभाव जग होत है, मिटि २ फिरि२होय॥१४८॥
धरतीमें लीकट खिचै, उठि नहिं आवै हाथ ।
ब्रह्म सत्य जग झूठ है, ह्वै ह्वै मिटि मिटि जात॥१४९॥
जगत ब्रह्ममें यों दिपै, ज्यों धरतीपर रेख ।
रेख मिटै धरती रहै, ऐसे ही जग देख ॥ १५० ॥
झूठ सांच दोउ नाम हैं, झूंठ मिटै थिर सांच ।
ज्यों लोहा पावक मिलो, लोह रहे मिटि आंच।१५१।
ज्यों सोवत स्वपनो उठो, दृष्टि खुली जब नाहिं ।
जग स्वप्नोसो ह्वै मिटै, समुझि देखु मन माहिं।१५२।
देखनको अति निकट है, कहबेको बहु दूरि ।
एकै ब्रह्म अखण्ड है, सकल रह्यो भर पूरि ॥१५३॥
अद्वै अचल अखण्ड है, अगम अपार अथाय ।
नहीं दूर नहिं निकट है, सद्गुरु दियो बताय॥१५४॥
भूल हुती जब दो हुते, अब नहिं एक न दोय ।
अटक उठी धोखोमिटो, आपनहू गयो खोय॥१५५॥

छप्पय-जहां गुरू नहिं शिष्य जहां नहिं साहब दासा ।
जहां गुफा नहिं योग जहां नहिं गगन निवासा ॥
जहां नहीं तप दान जहां नहिं देवल पूजा ।
जहां ब्रह्म नहिं जीव जहां नहिं एक न दूजा ॥

चरणदास मिलि मिटि गयो सो अचरज ऐसो न सूझिया
कौन सुने कासों कहै सो आप आप नहिं दूजिया ॥

दोहा—अपरम्पार अपार है, आदि अनादि अडोल ।
पुरुष पुरातन ब्रह्म है, बिन काया बिन बोल॥ १५६ ॥

अगम अगोचर अजर अनन्ता । अद्वैरूप अगम भगवन्ता ॥
निराकार निर्भय निर्वांना । परमेश्वर परमात्मा प्राना ॥
अर्ध उर्द्ध वह नहीं गोसाईं । नहिं बाहर नहिं मध्यम माहीं ॥
नहीं जीव नहिं सीव सहाई । श्वेत श्याम नहिं है अरुणाई॥
है जैसो तैसो ही राजै । आपन माहिं आपही गाजै॥
नहीं नाँव नहिं भावन भारी । है अखण्ड नहिं खंडित कारी॥
है सर्वज्ञ सत्य विज्ञाना । अभेद अछेद अकत्थ सुज्ञाना ॥
ज्योंका त्यों जैसेका तैसा । नहिं ऐसा नहिं कहिये वैसा॥

दोहा—नीचे नीचे अन्त ना, ऊपर ऊपर ऊप ।
बाँयें बाँयें हद्दना, दहिने दहिने गूप ॥ १५७ ॥
नहीं नीच ऊपर नहीं, नहिं दहिने नहिं वाम ।
मध्य नहीं आकार ना, निराकार नहिं नाम॥ १५८॥
निर्गुण ना सर्गुण नहीं, उपजै ना मिटि जाय ।
सब कुछ है अरु कुछ नहीं, सदा ब्रह्म थिरथाय १५९॥
जहां सांच जहँ झूठ है, जहां झूठ जहँ सांच ।
झूठ सांच दोनों नहीं, तहँ कुछ शीत न आंच॥ १६०॥
बंध नहीं मुक्तौ नहीं, पाप पुण्य भी नाहिं ।
उतपति ना परलय नहीं, नहीं नहीं भी नाहिं॥ १६१॥
इन्द्री ना निग्रह करौं, मन नहिं जीतूं ताहि ।
भूलौं ना चेतौं नहीं, मैं नहिं खोजौं वाहि ॥ १६२ ॥

योग नहीं युगता नहीं, नहीं ज्ञान नहिं ध्यान ।
बुधि विचार पहुँचै नहीं, तहँ कछु लाभ न हान॥१६३॥
जैनधर्म शिवशक्ति ना, स्वर्ग नरक नहिं वास ।
षट दर्शन चौवर्ण ना, नहीं करम संन्यास ॥१६४॥
सिद्ध नहीं साधक नहीं, नहीं तिमिरि नहिं भान ।
शून्य नहीं बेशून्य ना, नहीं तत्त्व विज्ञान ॥१६५॥
धर्म कर्म अरु मोह ना, अरु नाहीं वैराग ।
ज्योंका ज्यों सो भी नहीं, नहीं दुखी अनुराग॥१६६॥
ब्रह्मज्ञान विन मिटै न दोई । ब्रह्मज्ञान बिन मुक्त न होई ॥
दान यज्ञ तप नाना भोगा । ब्रह्मज्ञान बिन सबही रोगा ॥
कलह कल्पना मनमें दोष । ब्रह्मज्ञान बिन ना संतोष ॥
तिमिरि अविद्या सबही भागै । ब्रह्मज्ञानमें जो तू जागै ॥
मत मारग मिलि भर्म बढावै । पक्षपात लै सब भरमावै ॥
गुरु बिन ब्रह्मज्ञान नहिं पावै । गुरु बिन तत्त्व कौन दरशावै॥
गीता अरु वेदान्त बतावै । सामवेद भी योंही गावै ॥
ब्रह्मज्ञानमें निश्चय आवै । जीवन्मुक्ता सोइ कहावै ॥
दोहा-तू नाहीं सब राम है, वेद भेदकी सीख ।
एक रमैया रमि रह्यो, सकल अंड व्यापीक॥१६७॥
सिद्ध स्वरूपी ब्रह्ममें, ज्यों पाला सब लोक ।
पाला गलि पानी भवै, कछू न निकसै फोक॥१६८॥
उलझेको सुलझायकै, कई जन्मको सूत ।
चरणदास निर्भय भये, आशा तजि अवधूत॥१६९॥
कवित्त-स्वर्गहू न चाहिये जो होम यज्ञ दान करौं, इंद्र आदि भोगनको चितते उठायो है। ऋद्धिहू न चाहिये जो जक्तमें बडाई चलै, सिद्धिहू न चाहि सब साधन विसरायो है॥जातिहू

न चाही जो कुलकी मर्य्याद चलूं। चारि वर्ण एक योंही वेदनमें गयो है ॥ कासों कहैं मुक्त और बंध तौ न सूझे कहूं, कहै चरणदास आप आपन लौ लायो है ॥

सवैया

आदिहु आनँद अन्तहु आनँद, मध्यहु आनँद ऐसेही जानो ।
बंधहु आनँद मुक्तहु आनन्द, आनँद ज्ञान अज्ञान पिछानो ॥
लेटेहु आनँद बैठेहु आनँद, डोलता आनँद आनँद आनो ।
दास विचारि सबै कछु आनँद, आनँद छाँडिकै दुख न ठानो।१।
आदिहु चेतन अन्तहु चेतन, मध्यहु चेतन माया न देखी ।
ब्रह्म अद्वैत अखंड निरालँब, और न दूसरो आनन्द पेखी॥
सिंधु अथाह अपार विराजत, रूप न रंग नहीं कुछ रेखी ।
दास नहीं शुकदेव नहीं, तहँ ना कोइ मारग ना कोइ भेखी॥२॥
भक्षत हैं नहि भक्षत भोजन, पीवत हैं नहिं पीवत पानी ॥
डोलत हैं परसों नहिं डोलत, बोलत हैं नहिं बोलत बानी॥
रूप अनेक ब्योहारमें देखत, निश्चय मध्य कछू नहिं आनी॥
दास बताय दियो शुकदेवने, ऐसे रहै तेहि जानिये ज्ञानी॥३॥
सोवत है नहिं सोवत नीन्द सो, जागत है नहिं जाग दिखानी।
योग करैं न करैं कछु साधन, ध्यान करैं न करैं कछु ध्यानी ।
बाक्य विशाल करैं चरचा, न करैं चरचा नहिं होय विरानी।
दास बताय दियो शुकदेवने, ऐसे रहै तेहि जानिये ज्ञानी॥४॥

कवित्त-मंदिर क्यों त्यागे अरु भागै क्यों गिरिवरको, हरि जीको दूर जानि कलपै क्यों बावरे। साधन बतायो अरु चारिवेद गायो सब, आपनको आप देखि अन्तर लौ लावरे॥ ब्रह्मज्ञान हियो धरो बोलतेका खोज करों, माया अज्ञान हरो

आपा बिसराव रे। जैहैं जब आप धाप कहा पुण्य कहा पाप, कहै चरणदास तू निश्चय घर आव रे॥

अथ ब्रह्मज्ञानी लक्षणवर्णन

ज्ञानपरीक्षा--निरालंब १ निर्भ्रम २ निर्वासिक ३ निर्विकार ४।
विचारपरीक्षा--निर्मोहता १ निर्बंध २ निर्हिंसक ३ निर्वाण ४।
विवेकपरीक्षा--सावधान १ सर्वंगी २ सारग्राही ३ संतोषी ४।
परमसंतोषपरीक्षा अयाच १ अमानी २ अपक्षीक३ स्थिर ४।
सहजपरीक्षा-निष्प्रपंच १ निहतरंग २निर्लिप्त ३ निष्कर्म ४।
निर्वैरपरीक्षा--सुहृत् १ सुखदायी २ शीतलताई ३ सुमति ४।
शून्यपरीक्षा-शीलवंत १ सुबुद्धी २ सत्यवादी ३ ध्यानसमाधी४

जामें ये लक्षण होयँ ताको ब्रह्मज्ञानी कहिये और जामें ये लक्षण न होयँ ताको वाचकज्ञानी वितंडा जानिये॥

दोहा-जनक गुरू शुकदेवजी, चरणदास शिष होय।
आपा रामहि राम हैं, गई दुई सब खोय ॥१७०॥
ब्रह्मज्ञान पोथी कही, चरणदास निर्वार।
समझै जीवन्मुक्त हो, लहै भेद ततसार ॥ १७१ ॥

इति ब्रह्मज्ञानसागर ॥ १५ ॥

पुस्तकें मिलने के स्थान

१) खेमराज श्रीकृष्णदास,
श्रीवेंकटेश्वर स्टीम प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
खेतवाडी, मुंबई - ४०० ००४.

२) खेमराज श्रीकृष्णदास,
६६, हडपसर इण्डस्ट्रिअल इस्टेट
पुणे - ४११ ०१३.

३) गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास
लक्ष्मीवेंकटेश्वर स्टीम प्रेस,
व बुक डिपो,
अहिल्याबाई चौक, कल्याण
(जि. ठाणे - महाराष्ट्र)

४) खेमराज श्रीकृष्णदास,
चौक - वाराणसी (उ.प्र.)

हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थान :

खेमराज श्रीकृष्णदास
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
७ वी खेतवाडी बँक रोड कार्नर,
मुंबई - ४०० ००४.
दूरभाष/फैक्स-०२२-२३८५७४५६.

खेमराज श्रीकृष्णदास
६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट,
पुणे - ४११ ०१३.
दूरभाष-०२०-२६८७१०२५,
फैक्स -०२०-२६८७४९०७.

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो
श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डींग,
जूना छापाखाना गली, अहिल्याबाई चौक,
कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०१.
दूरभाष/फैक्स- ०२५१-२२०९०६१.

खेमराज श्रीकृष्णदास
चौक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१.
दूरभाष - ०५४२-४२००७८.

